"परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों, साहस कभी नहीं छोड़ना चाहिए।"

"जो अपने देश और सम्मान के लिए संघर्ष करता है, इतिहास उसी को याद रखता है।"

महाराणा प्रताप – स्वाभिमान और वीरता की अमर गाथा

"जिस व्यक्ति में अपने देश, धर्म और स्वाभिमान के लिए जीने और संघर्ष करने का साहस हो, उसे कोई पराजित नहीं कर सकता।"

महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई 1540 को राजस्थान के कुंभलगढ़ दुर्ग में हुआ था। वे मेवाड़ के महान राजा थे। उनके पिता का नाम महाराणा उदयसिंह और माता का नाम जयवंता बाई था। बचपन से ही प्रताप साहसी, निडर और स्वाभिमानी थे। उन्हें घुड़सवारी, तलवारबाजी और युद्धकला बहुत प्रिय थी।

उस समय भारत में मुगल सम्राट अकबर का शासन तेजी से फैल रहा था। अनेक राजाओं ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली, लेकिन महाराणा प्रताप ने अपने स्वाभिमान और मेवाड़ की स्वतंत्रता से कभी समझौता नहीं किया। उन्होंने कहा कि वे अपने राज्य की आज़ादी के लिए हर कठिनाई सह लेंगे, पर किसी के सामने झुकेंगे नहीं।

सन् 1576 में हल्दीघाटी का प्रसिद्ध युद्ध हुआ। महाराणा प्रताप ने अपने वीर सैनिकों और अपने प्रिय घोड़े चेतक के साथ बहादुरी से युद्ध किया। युद्ध के बाद भी उन्होंने हार नहीं मानी। जंगलों में रहकर, कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा। कई बार उनके परिवार को घास की रोटियाँ खाकर भी दिन बिताने पड़े, लेकिन उन्होंने कभी अपना स्वाभिमान नहीं छोड़ा।

महाराणा प्रताप का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा वीर वही है जो कठिन परिस्थितियों में भी अपने सिद्धांतों और कर्तव्य से पीछे नहीं हटता। उन्होंने अपने जीवन से यह संदेश दिया कि सम्मान, स्वतंत्रता और आत्मविश्वास किसी भी धन-दौलत से अधिक मूल्यवान हैं।

महाराणा प्रताप के प्रेरणादायक विचार

- *"स्वाभिमान के साथ जीना ही सच्चा जीवन है।"*

हमें क्या सीख मिलती है?

✓ कठिनाइयों से कभी नहीं डरना चाहिए।
✓ अपने लक्ष्य और सिद्धांतों पर अडिग रहना चाहिए।
✓ स्वाभिमान और ईमानदारी जीवन की सबसे बड़ी ताकत हैं।
✓ सच्ची सफलता संघर्ष और धैर्य से मिलती है।

महाराणा प्रताप केवल एक राजा नहीं थे, बल्कि साहस, देशभक्ति और आत्मसम्मान की ऐसी मिसाल थे, जो आज भी करोड़ों लोगों को प्रेरणा देती है।